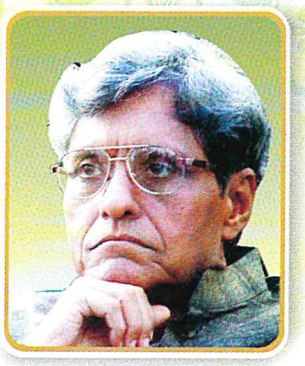


Prof. Gunvant Shah

Prof. Gunvant Shah had a distinct career in the field of education. He was a Visiting Professor to the University of Michigan (Ann Arbor, U.S.A.) during 1967-68. He was a Consultant to Asian Development Bank (ADB) for Bangladesh in the year 1984-85. He was also a Visiting Professor to Arizona State University (Tempe) during 1985. He represented India at UNESCO (Paris) in 1975. He was a member of the Indian delegation to GDR (East Germany) in the year 1979.

2. Born on March 12, 1937, Prof. Shah received his Bachelor of Chemistry from Gujarat University, Ahmedabad and B.Ed., M.Ed. and Ph.D. in Education from M.S. University, Baroda.

3. Prof. Shah took voluntary retirement early to devote more time to reading, writing, reflecting, which resulted in giving a new dimension to the lyrical essay-writing in Gujarati literature. His critiques on Ramayana, Upanishads and the Gita turned out to be the best-sellers. Recently the Hindi version of his critique on Ramayana entitled 'Ramayana: Manavata ka Mahakavya' published by Bharateeva Gyanpith (Delhi) has been declared as best-seller. Prof. Shah has been recognized as an original thinker and writer in the field of psycho-spiritual literature. During the last three decades, Prof. Shah has been a globetrotter visiting many countries for giving lectures in the field of education and philosophy.

4. Prof. Shah was a founder of Panchasheel Youth Movement during 1987-1997 and was an activist going from village to village leading Padayatras for conducting youth shivirs. The people of Gujarat know him as a popular speaker giving lectures on Gandhi, Buddha, Mahavir and Sardar Patel.

5. Prof. Shah has been a recipient of many awards in the field of literature including Ranjeentram Gold Medal and Narmad Gold Medal in 1997, Maharashtra Sahitya Academy award in 2014 and Darshak Award.



प्रो. गुणवंत शाह

प्रो0 गुणवंत शाह का शिक्षा के क्षेत्र में एक विशिष्ट कॅरिअॅर रहा है। आप मिशिगन यूनिवर्सिटी (एन आरबोर, यू एस ए) में सन् 1967-68 के दौरान एक विजिटिंग प्रोफ़ेसर रहे। आप वर्ष, 1984-85 में बंगलादेश के संबंध में एशियाई विकास बैंक के परामर्शदाता रहे। आप वर्ष, 1985 के दौरान एरिज़ोना स्टेट यूनिवर्सिटी (टेम्प) में भी एक विजिटिंग प्रोफेसर रहे। आपने सन् 1975 में यूनेस्को (पेरिस) में भारत का प्रतिनिधित्व किया। आप वर्ष, 1979 में जी डी आर (ईस्ट जर्मनी) में भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल के एक सदस्य रहे।

2. आपका जन्म मार्च 12, 1937 को हुआ। आपने गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद से रसायन-विज्ञान में स्नातक की उपाधि तथा एम एस यूनिवर्सिटी, बड़ौदा से बी.एड, एम.एड और शिक्षा में पीएच.डी की उपाधियां हासिल कीं।

3. आपने पठन, लेखन और उसे प्रतिबिंबित-उजागर करने में अपेक्षाकृत अधिक समय लगाने के लिए जल्दी ही स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली, जिसके फलस्वरूप, गुजराती साहित्य में आपके लयात्मक एवं गीतात्मक निबंध-लेखन को एक नया आयाम मिला। रामायण, उपनिषद और गीता के बारे में आपकी समीक्षाएं सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली, पसंद की जाने वाली और बिकी जाने वाली समीक्षाओं के रूप में मशहूर हुईं। हाल ही में रामायण के बारे में भारतीय ज्ञान पीठ (दिल्ली) द्वारा प्रकाशित 'रामायण: मानवता का महाकाव्य' शीर्षकस्थ आपकी समीक्षा का हिन्दी-रूपांतर सबसे ज़्यादा बिकने वाला और पसंद किया जाने वाला घोषित किया गया। मनो-आध्यात्मिक साहित्य के क्षेत्र में आपको एक मौलिक विचारक और लेखक के रूप में सम्मानित किया गया है। पिछले तीन दशकों के दौरान शिक्षा और दर्शन के क्षेत्र में व्याख्यान देने के सिलसिले में कई देशों का दौरा करने वाले आप एक भू-पर्यटक (ग्लोबट्रोटर) रहे हैं।

4. आप सन् 1987 से 1997 तक के दौरान, पंचशील युवा आंदोलन के संस्थापक और युवाओं के शिविरों का संचालन करने के लिए पद-यात्राओं का नेतृत्व करते हुए गांव-गांव जाने वाले एक सक्रिय कार्यकर्ता रहे। गुजरात के लोगों में आप गांधी जी, बुद्ध, महावीर और सरदार पटेल के बारे में व्याख्यान देने वाले एक वक्ता के रूप में लोकप्रिय हैं।

5. आपको साहित्य के क्षेत्र में सन् 1997 में रंजीनत्रम स्वर्ण पदक, नर्मद स्वर्ण पदक, सन् 2014 में महाराष्ट्र साहित्य अकादमी पुरस्कार और दर्शक पुरस्कार सहित कई सम्मानों और पुरस्कारों से नवाज़ा गया है।